17 मई 2008, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वस्तु स्वरूप के प्रतिपादन के लिये प्रत्येक अनुयोग की अपनी अलग शैली है। शैली को समझे बिना वस्तु स्वरूप समझना संभव नहीं है। ह्न मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

वर्ष : 31, अंक : 04 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मई (द्वितीय), 2008 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

गुरुदेवश्री की 119 वीं जन्म जयन्ती मनाई

1. जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में गुरुदेवश्री की 119 वीं जन्म जयन्ती के अवसर पर प्रात: विनयांजली सभा का आयोजन किया गया।

सभा में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री एवं श्री जुगराजजी कासलीवाल ने गुरुदेवश्री के जीवन से जुड़े विविध पहलुओं सहित अपने संस्मरण सुनाये।

सभा का संचालन पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री ने किया।

2. देवलाली (महा.) : यहाँ दिनांक 3 से 8 मई तक गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की 119 वीं जन्मजयन्ती के अवसर पर पंचपरमेष्ठी विधान का आयोजन विधिवत् सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री के आत्मानुशासन एवं रात्रि में मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचन हुये।

3. गजपंथा : यहाँ सिद्धक्षेत्र पर दिनांक 8 मई को वेदी शिलान्यास एवं गुरुदेव जयन्ती समारोह का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने अपने मार्मिक उद्बोधन में भगवान महावीर से चली आ रही आर्ष परम्परा के प्रवाह में गुरुदेवश्री के योगदान को विस्तार से बताया।

इस प्रसंग पर आयोजित सम्मेद शिखर विधान एवं शिलान्यास के समस्त कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, पण्डित कान्तिकुमारजी इन्दौर ने सम्पन्न कराये।

4. उदयपुर (राज.) : अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन एवं महिला फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 8 मई को गुरुदेवश्री की जन्म जयन्ती के अवसर पर प्रात: चन्द्रप्रभ दि. जैन मंदिर से प्रभात फेरी निकाली गई।

रात्रि में कानजीस्वामी के जीवन संबंधी प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती आशा पाण्डे ने किया। कार्यक्रम में श्री जिनेन्द्र शास्त्री, श्री लक्ष्मीलालजी बण्डी, श्री कन्हैयालालजी दलावत, श्री महावीरजी शास्त्री टोकर, श्रीमती सीमा जैन का सराहनीय सहयोग रहा।

गुरुदेवश्री की जन्म जयन्ती पर शहर के विविध मुख्य मार्गों पर चार बड़े-बड़े होर्डिंग लगाकर धर्मप्रभावना की गई।

धार्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

देवलाली (महा.) : यहाँ श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट में श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु समाज वृहन्मुम्बई के अंतर्गत श्री अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जबेरी बाजार मुम्बई द्वारा श्रीमती ऊषाबेन कामदार तथा दीपूभाई प्रभुदास कामदार के सौजन्य से आध्यात्मिक बाल शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के आमंत्रणकर्त्ता श्रीमती वरजूबेन दलीचंद हथाया परिवार थे।

इस अवसर पर पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री नासिक, पण्डित चिंतामणीजी औरंगाबाद, ब्र.चेतनाबेन देवलाली, पण्डित सोनूजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित आदित्यजी शास्त्री खुरई, श्रीमती स्वाति जैन एवं श्रीमती श्रुति जैन द्वारा बाल कक्षायें ली गई।

अधिवेशन के समय के संबंध में सूचना

तीर्थधाम मंगलायतन में दिनांक 25 मई को आयोजित अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के 29 वें राष्ट्रीय अधिवेशन का समय दोपहर 2 बजे से रहेगा एवं आवश्यकता होने पर दूसरा सत्र शाम 7 बजे से आयोजित किया जायेगा।

अत: फैडरेशन की सभी शाखायें, प्रान्तीय, राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य इसी समय के अनुसार अधिवेशन में उपस्थित होने का कार्यक्रम बनायें।

मंगलायतन, अलीगढ में 18 मई से 4 जून तक और श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में 3 से 12 अगस्त तक आयोजित शिविरों में अवश्य पधारें।

सम्पादकीय – 6

चलते–फिरते सिद्धों से गुरु

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

मुनिराज भावों की अपेक्षा छठवें–सातवें गुणस्थानों में झूले की तरह झूलते रहते हैं। करणानुयोग के अनुसार छठवाँ गुणस्थान शुभभावों का है, जिसमें आहार, विहार एवं उपदेश देने आदि के भाव होते हैं और सातवें गुणस्थान में शुद्धोपयोग में मग्न होकर स्वरूपगुप्त हो जाते हैं।

यहाँ ज्ञातव्य है कि प्रत्येक अन्तर्मुहूर्त के अन्दर उन्हें सातवें से छठवाँ एवं छठवें से सातवाँ गुणस्थान होता ही रहता है, इसकारण वे आहार–विहार करते, उपदेश करते एवं शास्त्र लिखने के बीच–बीच में भी उन्हें शुभोपयोग से शुद्धोपयोग होता है। अशुभभावों का तो मुनि भूमिका में अस्तित्व ही नहीं होता। उनका आहार भी तप बढ़ाने का हेतु होने से शुभभाव ही है, जबकि गृहस्थ का आहार–विहार अशुभभाव है; क्योंकि गृहस्थ का आहार–विहार शरीर–पोषण, भोगों और आरंभ परिग्रह संग्रह के लिए होता है। छहढाला में भी कहा है ह्न

'इक बार दिन में ले अहार खड़े अल्प निज पान में।
तथा ह्न **लें तप बढ़ावन हेत नहिं, तन पोषते तज रसन को।।**

मुनिराज दिन में एक बार ही आहार लेते हैं, वह भी भरपेट नहीं अल्पाहार ही लेते हैं और वह भी खड़े–खड़े अपने हाथ में ही लेते हैं तथा तप की वृद्धि हेतु लेते हैं, तन पोषण के लिए नहीं।'

ध्यान व अध्ययन के लिए मुनिराज एकान्त में रहना चाहते हैं, एतदर्थ वन में वसतिकायें बनाई जाती हैं, नगर से दूर नसिया बनाई जाती हैं, जिससे कमजोर संहनन वाले साधु वन्य–जंतुओं से सुरक्षित रहकर निर्बाध आत्मसाधना, ध्यान–अध्ययन और मनन–चिन्तन कर सकें। **ज्ञातव्य है कि उनकी वसतिकाओं में किवाड़–सांकल–कुन्दे नहीं होते हैं; क्योंकि उन पर किसी का एकाधिकार नहीं होता। अन्यथा वह परिग्रह की श्रेणी में आ जाता है।**

मुनिराज नगरवासी गृहस्थों की संगति से जितने अधिक बचे रहेंगे, उतनी ही अधिक आत्मसाधना कर सकेंगे; क्योंकि गृहस्थ व्यर्थ की राग–द्वेष वर्द्धक बातें करके साधुओं का उपयोग खराब करते हैं।

जिस राग–द्वेष से बचने के लिए वे साधु हुए हैं, उन्हें येन–केन–प्रकारेण उन्हीं राग–द्वेषों के सामाजिक कार्यों में उलझा देना ठीक नहीं है।

इन गृहस्थों की लौकिक वार्ता से बचने के लिए ही वे एकान्तवासी होते हैं; पर आहार एक ऐसी आवश्यकता है कि जिसके कारण उन्हें इन गृहस्थों के सम्पर्क में आना ही पड़ता है। अत: सावधानी के लिए ये नियम रखे गये हैं कि जब मुनि आहार के विकल्प से नगर में आते हैं तो मौन लेकर ही आते हैं। दूसरे, वे खड़े–खड़े ही आहार करते हैं। तीसरे, वे करपात्री ही होते हैं; क्योंकि भोजन की जो स्वाधीनता हाथ में खाने में है, वह थाली में खाने में नहीं रहती। अतः वे करपात्री ही होते हैं।

मुनि को तो शुद्ध सात्त्विक आहार से अपने पेट का खड्डा भरना है, वह भी आधा–अधूरा। शान्ति से बैठकर धीरे–धीरे स्वाद ले–ले कर भरपेट खाना उन्हें अभीष्ट नहीं है; क्योंकि भरपेट खाने के बाद आलस का आना स्वाभाविक ही है। अत: जिन मुनिराजों को आहार से लौटने पर छह घड़ी तक सामायिक करनी है, वे प्रमाद बढ़ानेवाला भरपेट भोजन कैसे कर सकते हैं ? इसकारण मुनिराजों का अल्पाहार ही होता है। वे मात्र शुद्धोपयोग की वृद्धि के लिए शुद्ध–सात्त्विक अल्प आहार लेते हैं। वे पानी भी भोजन के समय ही लेते हैं, बाद में पानी भी नहीं लेते।

यह तो आप जानते ही हैं कि मुनिराज जब आहार लेकर वापिस लौटते हैं तो उन्हें आचार्यश्री के समक्ष उपस्थित होकर आहारचर्या के काल में मन–वचन–काय की क्रिया में यदि कोई दोष लग गया हो तो वह सब भी बताकर प्रायश्चित्त लेना होता है; क्योंकि आहार के काल में गृहस्थों के समागम की अनिवार्यता है और उनके समागम में दोष होने की संभावना भी अधिक रहती है। इसी बात से अनुमान लगाया जा सकता है कि गृहस्थों का समागम साधुओं के लिए कितना हानिप्रद है। इसी की विशुद्धि के लिए यह नियम रखा गया है कि आहारचर्या के बाद साधु आचार्यश्री के पास जाकर सब–कुछ निवेदन करें और उनके आदेशानुसार प्रायश्चित्त करें।'

इस बात को ध्यान में रखकर वीतरागी साधुओं को गृहस्थों के समागम से बचने का पूरा–पूरा प्रयत्न करना होता है। यदि गृहस्थों को मुनियों का सत्समागम मिल जाता है तो वे उनसे वीतराग चर्चा ही करें, तत्त्वज्ञान समझने का ही प्रयास करें। मोक्षमार्ग में आगे बढ़ने का मार्गदर्शन प्राप्त करें।

मुनिराज उद्दिष्ट आहार के त्यागी होते हैं। उनकी वृत्ति को मधुकरी वृत्ति कहा गया है। जिसप्रकार भौंरा या मधुमक्खी जिन फूलों से मधु ग्रहण करती है, रस ग्रहण करती है; उसे रंचमात्र भी क्षति नहीं पहुँचाती। उसीप्रकार मुनिराज भी, जिसके यहाँ आहार लेते हैं, उसे किसी भी प्रकार का पीड़ा नहीं पहुँचने देते, उसे दु:खी होने में निमित्त नहीं बनते।

मुनिराजों के उद्दिष्ट/अनुदिष्ट आहार दान के सम्बन्ध में सही जानकारी हेतु एक श्रोता ने आचार्यश्री से विनयपूर्वक जानने की जिज्ञासा प्रगट की।

आचार्यश्री ने समाधान करते हुए कहा ह्न ''जब–जब मुनियों की आहार चर्या हेतु नगर में आने की संभावना होती है, तब–तब गृहस्थ स्वयं के लिए भी ऐसा शुद्ध (निर्दोष) आहार बनकर तैयार रखते हैं, जो मुनियों के योग्य हो और मुनियों के आहार हेतु आगमन के काल तक द्वारपेक्षण करते हैं, अर्थात् मुनियों के आने की प्रतीक्षा करते हैं।

मुनि सहज भाव बिना किसी पूर्व सूचना के अंजुलि बाँधे द्वार पर आयें तो उनका नवधा भक्ति पूर्वक पड़गाहन करके आहार हेतु उनका आह्वानन करते हैं तथा उन्हें आहार कराकर स्वयं भोजन करते हैं।

मुनि भी आहार सम्बन्धी 46 दोष टाल कर वहीं आहार लेते हैं जो उनके ही उद्देश्य से प्रथक् से आरंभ करके बनाया गया न हो। यदि उन्हें किन्हीं भी कारणों से यह ज्ञात हो जाये कि यह आहार हमारे लिये विशेष रूप से तैयार किया गया है तो वे उस उद्दिष्ट आहार को ग्रहण नहीं करते; क्योंकि वे उद्दिष्ट आहार के त्यागी होते हैं।

उद्दिष्ट आहार के त्यागी तो क्षुल्लक–ऐलक भी होते हैं, इसी कारण वे किसी के नियंत्रण पर आहार को नहीं जाते, तो मुनि उद्दिष्ट आहार कैसे लेंगे?

मुनि कभी भी किसी से भी यह नहीं कहते कि वे कैसा आहार लेंगे, कब लेंगे, कहाँ से लेंगे? ऐसा कोई संकेत भी नहीं करते/कराते, बल्कि वे तो वृत्तिसंख्यान व्रत के अनुसार आहार के हेतु जाते समय ऐसी अटपटी प्रतिज्ञायें कर लेते हैं कि आहार दाता जिनका अनुमान मुश्किल से ही लगा पाते हैं, फिर भी वह नाना प्रकार से अनुमान लगाकर पड़गाहन की विधियाँ बदल–बदल कर मुनियों के पड़गाहन का प्रयत्न करते हैं और आहार की विधि मिलने पर अपनी भक्ति के अनुसार साधु के संयम साधन के अनुकूल आहार कराकर अपने को धन्य मानते हैं। ऐसी भावना से दातार विशेष पुण्यार्जन करते हैं।

श्रोता ने पुनः विनयपूर्वक पूछा ह्न ''आचार्यश्री ! उद्दिष्ट आहार के विषय में मेरा एक प्रश्न यह है कि ह्न अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनियों के वृहद् संघ के धुएँ से उनका गले रुँध जाने पर सेवयिंयों का जो विशेष आहार उन मुनियों को दिया गया था, वह आहार उद्दिष्ट था या नहीं?

दूसरे, मुनिराज ऋषभ देव (तीर्थंकर) को जो राजा श्रेयांस द्वारा जाति स्मरण होने पर इच्छुरस का विशेष आहार दिया गया था, वह इच्छुरस भी उद्दिष्ट आहार था या नहीं?

तीसरे, प्रत्येक पंचकल्याणकों में जो आहारदान की विधि सम्पन्न होती है, वह आहार भी वहीं विशेष चौका लगाकर आहार दान हेतु तैयार किया जाता है, वह आहार उद्दिष्ट होता है या नहीं?

चौथे, बीमार मुनिराजों के आहार में जो औषधियाँ देने का प्रावधान आगम में है। वे औषधियाँ देना भी उद्दिष्ट आहार में आयेगा या नहीं?

ये कुछ ऐसे प्रश्न है जिनका समाधान आगम के अनुकूल अपेक्षित है। हे आचार्यश्री! आपके सिवाय इसका समाधान अन्य के द्वारा संभव नहीं हैं, क्योंकि आप तो स्वयं चलते–फिरते सिद्धों के समान हैं एवं स्वयं आगम हैं, आपके द्वारा ही आगम का उपदेश हमें मिलता है।''

आचार्यश्री ने समाधान करते हुए कहा ह्न ''मुनि तो किसी भी परिस्थिति में यह कभी नहीं कहते कि अमुक औषधि या अमुक प्रकार का विशिष्ट आहार हमें दो। परन्तु जिनागम में आहार से सम्बन्धित दो मार्गों का उल्लेख है। प्रथम उत्सर्ग मार्ग और दूसरा अपवाद मार्ग। वस्तुतः उत्सर्ग मार्ग ही राजमार्ग है, जिसकी चर्चा ऊपर कर ही दी है। दूसरा अपवाद मार्ग विशेष परिस्थितियों में अपनाया जाता है। तुम्हारे ये चारों प्रश्नों का समाधान अपवाद मार्ग से सम्बन्धित है।

अपवाद मार्ग के अनुसार दातार पात्र की बीमारी या किसी भी परिस्थिति के अनुसार मुनिराज को दवा आदि दे सकता है। वैसे भी उद्दिष्ट त्याग व्रत दातार के नहीं, मुनियों के होता है। अतः मुनि जब अपवाद मार्ग अपनाते हैं तो विशेष परिस्थिति में अपनी कमजोरी में अपनाया मानकर उसका प्रायश्चित भी किसी न किसी रूप में लेते हैं।

दातार के जो उत्पादन आदि दोष आगम कहे हैं, दातार उनसे अवश्य बचता है और बचना भी चाहिए।

।। ॐ नमः ।।

कहान गुरु की गुरु-गर्जना

ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

पुण्य–पाप दोऊ करम, बंध रूप दुर मानि।
शुद्ध आतमा जिन लह्यो, नमूँ चरण हित जानि।।

लगभग 75 वर्ष पूर्व लोग पुण्य एवं धर्म में अन्तर नहीं समझते थे, दोनों को एक ही मानते थे। पुण्य करते–करते धर्म हो जायेगा ऐसा ही सर्वाधिक विश्वास था। कोई भी पुण्य व धर्म के अन्तर को नहीं जानता था ह्न ऐसा कहकर हमें किसी का अनादर नहीं करना है। कुछ विशिष्ट लोग अवश्य जानते होंगे, किन्तु उन्होंने उसे अपने तक ही सीमित रखा, वे उसे जन–जन की वस्तु नहीं बना सके। यह बात सबको जानने लायक है ह्न ऐसी उन्होंने आवश्यकता ही अनुभव नहीं की। इसलिये साधारणजन इस तत्त्वज्ञान से अनभिज्ञ रह गये।

जब श्री कानजीस्वामी ने दिगम्बर धर्म में प्रवेश किया और समयसारजी शास्त्र के माध्यम से उन्हें पुण्य व धर्म में जमीन– आसमान जैसा महान अन्तर ख्याल में आया तो वे झूम उठे 'अहा ! गजब बात है भाई !! हम तो अब तक पुण्य को ही धर्म समझे बैठे थे, धर्म की तो कोई जात ही जुदी है। अहो । इसकी तो हमें खबर ही नहीं थी। सारा जगत इन्हीं पुण्य की क्रियाओं में अटका हुआ है और धर्म बिना यह बहुमूल्य मनुष्यभव व्यर्थ में खो रहा है। धर्म की तो किसी को कुछ खबर ही नहीं है। धर्म तो पुण्य–पाप से रहित कोई अलग ही चीज है।'

जब यह बात उनकी समझ में भली–भाँति आ गई तो फिर यह अपूर्व बात दूसरों को बताये बिना, जग जाहिर किये बिना उनसे रहा नहीं गया। जो निधि उन्हें मिली थी, उसे जन–जन तक पहुँचाने की तीव्र भावना उनमें जागृत हो गई। जगत की मान्यता के विरुद्ध जब उन्होंने यह क्रान्तिकारी कदम उठाया तो सारे देश में खलबली मच गई और जब उन्होंने पुण्य को धर्म के क्षेत्र से निकालकर कर्म के क्षेत्र में लाकर खड़ा किया तो हायतोबा–हायतोबा होने लगी। उन्होंने देखा यथार्थ धर्म की तो कहीं कोई चर्चा ही नहीं और धर्म के नाम पर कोरे क्रिया–काण्ड में ही लोग फंसे हैं तो उन्होंने दृढता से कहना प्रारंभ किया कि कोरे बाहरी क्रियाकाण्ड से कुछ नहीं होगा। यह कार्य तो अनंत बार किया है।

छहढाला में आया है ह्न

मुनिव्रत धार अनंत बार ग्रैवेयक उपजायो।
पै निज आतम ज्ञान बिना, सुख लेश न पायो।।

तत्त्वज्ञान का अभ्यास कर वीतराग धर्म को समझना होगा। राग भाव में धर्म नहीं है, शुभराग भी धर्म नहीं है। आत्मज्ञान बिना यह सब मुक्ति के मार्ग में कार्यकारी नहीं है।

गुरुदेव की यह बात सुनकर क्रियाकाण्ड में विश्वास रखनेवाले कुछ लोग उनका विरोध भी करने लगे, परन्तु उनके विरोध से गुरुदेव घबराये नहीं, वे मेरु की तरह अपनी बात पर अचल रहे, क्योंकि उन्हें आगम

(शेष पृष्ठ–७ पर...)

नन्दीश्वर विद्यापीठ का नवीन सत्र

खनियांधाना (शिवपुरी) : यहाँ श्री महावीर कुन्दकुन्द कहान नन्दीश्वर दिगम्बर जैन विद्यापीठ खनियांधाना में सत्र – 2008–09 हेतु प्रवेश प्रारंभ हो गया है, जिसमें कक्षा 6 से 9 तक के छात्रों को आवासीय छात्रों के रूप में प्रवेश दिया जाता है। इसका सत्र 15 जून 2008 से प्रारंभ हो रहा है। इच्छुक विद्यार्थी पालकों सहित दिनांक 15 से 19 जून 2008 तक आयोजित होनेवाले संस्कार शिक्षण–शिविर में अवश्य पधारें, जिसमें चयन एवं साक्षात्कार पद्दति से विद्यार्थियों को प्रवेश दिया जायेगा।

सम्पर्क – मनीष शास्त्री, चेतनबाग, खनियांधाना। 09424434234

छहढाला शास्त्र पर परीक्षा आयोजित

रतलाम (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन तत्त्वलहर महिला मण्डल रतलाम के तत्त्वावधान में रविवार, दिनांक 30 मार्च, 08 को आनंद ट्यूटोरियल्स, तोपखाना में छहढाला शास्त्र की प्रथम ढाल के आधार से परीक्षा आयोजित की गई, जिसमें समस्त जैन समाज के लगभग 60 परीक्षार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

यह परीक्षा पण्डित पद्मकुमारजी अजमेरा व श्रीमती अंजनाजी अजमेरा के निर्देशन में सम्पन्न हुई।

धर्म प्रभावना

जयपुर (राज.) : यहाँ अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा–अलवर के सदस्यों द्वारा पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में श्री संजीवकुमार महेन्द्रकुमारजी गोधा के बी–54, जनता कॉलोनी स्थित नूतन गृह प्रवेश के अवसर पर द्वि–दिवसीय प्रवचन–विधान का कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया।

दिनांक 30 अप्रैल, 08 को सायंकाल सिद्धान्ताचार्य पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के मार्मिक प्रवचन एवं जिनेन्द्र भक्ति ने उपस्थित जन समुदाय का मन मोह लिया।

दिनांक 1 मई, 08 को प्रात: शान्ति विधान का सुन्दर आयोजन किया गया। इस प्रसंग पर पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री आदि की ससम्मान उपस्थिति रही।

इस अवसर पर संस्था को 2100/– रुपये की राशि प्रदान की गई।

फैडरेशन की शाखाओं से अनुरोध

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन द्वारा संचालित तत्त्वज्ञान के प्रचार–प्रसार की गतिविधियों की जानकारी सभी समाज को होवे, इसके लिये सभी शाखाओं से अनुरोध है कि वे अपनी–अपनी शाखाओं में संचालित गतिविधियों की सूचना जैनपथप्रदर्शक में प्रकाशनार्थ अवश्य भेजें।

ध्यान रहे कि जैनपथ प्रदर्शक प्रत्येक माह की 12 एवं 27 तारीख को छपने चला जाता है। अत: अपने कार्यक्रम की सम्पन्नता के समाचार इन तारीखों को ध्यान में रखते हुये शीघ्रातिशीघ्र भेजें।

शिविर सानन्द सम्पन्न

1. मुम्बई (मलाड–वेस्ट) : यहाँ एवरशाईन नगर में दिनांक 17 से 20 अप्रैल तक श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में चार दिवसीय शिविर का आयोजन बड़े हर्षोल्लास पूर्वक किया गया।

इस अवसर पर पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई के समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये तथा पण्डित विपिनजी शास्त्री श्योपुर, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री, पण्डित सौरभजी शास्त्री, पं. राहुलजी, पण्डित अनेकांतजी भारिल्ल एवं कु. मुक्ति जैन द्वारा क्रमबद्धपर्याय, छहढाला, बालबोध पाठमाला आदि विषयों पर कक्षायें ली गई।

इस अवसर पर आयोजित पूजन–विधानादि के कार्य पण्डित अभिनयजी शास्त्री कोलकाता ने सम्पन्न कराये।

2. जामनगर (गुज.) : अंतर्राष्ट्रीय दि. जैन मुमुक्षु महासंघ द्वारा दिनांक 25 से 30 अप्रैल 08 तक शिक्षण–शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रतिदिन प्रात: गुरुदेवश्री का टेप प्रवचन चलता था। इसके अतिरिक्त पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन, पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट, पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर, पण्डित सचिन जैन भरड़ा, पण्डित सुधीर जैन अमरमऊ, पण्डित अनुराग जैन भगवाँ, पण्डित विशेष जैन बड़ामलहरा एवं पण्डित करण शाह द्वारा बालकों एवं प्रौढों के लिये कक्षाओं का आयोजन हुआ।

सायंकाल सांस्कृतिक कार्यक्रमों द्वारा धर्म प्रभावना हुई। शिविर का उद्घाटन श्री अनंतभाई सेठ मुम्बई एवं श्री बसन्तभाई दोशी मुम्बई द्वारा हुआ।

तमिलभाषा में अनुवाद होना चाहिये

समयसार की ज्ञायभाव प्रबोधिनी टीका को पढकर **पाण्डीचेरी से श्री चम्पालालजी जैन** लिखते हैं कि ह्न श्री हुकमचन्दजी भारिल्ल साहब ने समयसार पर बहुत ही सुन्दर टीका लिखी है। इसमें प्रत्येक व्यक्ति को सुगमता से ज्ञान प्राप्त हो इसकी भरसक कोशिश की है। पण्डितजी बधाई के पात्र हैं। उपरोक्त ग्रन्थ के प्रथम पेज पर यह देखकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि ऐसे महान ग्रंथ का गुजराती, मराठी और अंग्रेजी में अनुवाद होने जा रहा है। यह एक महान उपलब्धि है। मेरा आपसे सविनय निवेदन है कि अगर इस ग्रन्थ का तमिल में अनुवाद होकर प्रकाशित होवे तो बड़ा ही उपयुक्त होगा, क्योंकि तमिल भाषा में जैन साहित्य की बहुत कमी है। इसलिये ऐसे महान ग्रन्थ का अनुवाद तमिल में होना ही चाहिये, जिससे तमिल भाषियों को समयसार का ज्ञान प्राप्त हो ह्न यह एक महान कार्य है। इसे आपकी ही संस्था करा सकती है, क्योंकि आपके यहाँ प्रत्येक भाषा के अच्छे से अच्छे विद्वान मौजूद है, अत: आपसे निवेदन है कि इस महान यज्ञ को पूर्ण करने की कृपा कीजियेगा।

ऐसे पूनीत कार्य में मैं भी यथाशक्ति सहयोग करने की भावना रखता हूँ।

विचार गोष्ठी सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में दिनांक 11 मई को द्रव्य संग्रह एक विवेचन विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया, इसमें 15 वक्ताओं द्वारा सार्वजनिक सभा में वक्तव्य दिया गया। सभा का संचालन पण्डित खेमचन्दजी जैन ने किया। सभी कार्यक्रमों में श्री जिनेन्द्र शास्त्री, श्री लक्ष्मीलालजी बण्डी, श्री कन्हैयालालजी दलावत, श्री महावीरजी शास्त्री टोकर, श्रीमती सीमा जैन का सराहनीय सहयोग रहा।

मंगलायतन चलिये फैडरेशन से जुड़िये ! फैडरेशन का नारा है ह्न भावी इतिहास हमारा है !! हमारे उद्देश्य ह्न आत्मानुभूति व तत्त्वप्रचार !!!

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का उन्तीसवाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

(रविवार,दिनांक 25 मई 2008)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का उन्तीसवाँ राष्ट्रीय अधिवेशन रविवार दिनांक 25 मई 2008 को तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ़ में आयोजित होने जा रहा है। उक्त अधिवेशन में फैडरेशन द्वारा अब तक किये गये कार्यों की समीक्षा तथा आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय की जायेगी।

इस अधिवेशन में फैडरेशन की शाखाओं के सदस्य तो उपस्थित होंगे ही आप सभी आत्मार्थी महानुभाव भी इस अवसर पर सादर आमंत्रित हैं।

कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना निम्नांकित सम्पर्क सूत्रों पर अवश्य देवें; ताकि आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

सम्पर्क सूत्र :– 1. पण्डित पीयूषकुमार शास्त्री, संगठन मंत्री, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर–15 (राज.) **Mob. :** 9413347829. **E-Mail :** ptstjaipur@yahoo.com

2. पण्डित अशोककुमार लुहाड़िया, निदेशक, तीर्थधाम मंगलायतन, आगरा–अलीगढ़ मार्ग, निकट हनुमान चौकी, सासनी, महामायानगर (उ. प्र.) **Mob. :** 9897890893.

आत्मार्थी युवा साथियों यदि आप...

ह्न आत्मकल्याण के मार्ग में लगना चाहते हों
ह्न तत्त्वप्रचार का कार्य करना चाहते हों
ह्न समाज को सदाचार व श्रावकाचार के मार्ग पर लाना चाहते हों
ह्न धर्म व संस्कृति के उत्थान व प्रचार–प्रसार की इच्छा रखते हों
ह्न संगठन सम्बंधी कार्यों में रुचिवंत हों
ह्न युवाओं के एकमात्र रचनात्मक संगठन अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन से जुड़कर अपनी रचनात्मकता को नई दिशा देना चाहते हों तो.....

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के 29 वें राष्ट्रीय अधिवेशन में अवश्य भाग लीजिये।

हमारा हार्दिक आमंत्रण है।

क्या आपने यह कर लिया है ?

(1) क्या आपने फैडरेशन के राष्ट्रीय अधिवेशन में भाग लेने के लिये यात्रा का रिजर्वेशन करवा लिया है।
(2) क्या आपने अपने आगमन की सूचना मंगलायतन व जयपुर भेज दी है।

यदि अभी तक नहीं तो आज ही करें।

क्या आप चाहते हैं कि तत्त्वप्रचार के महायज्ञ में एक आहूति आपकी भी हो....

1. क्या आप अपने यहाँ वीतराग–विज्ञान पाठशाला खोलना चाहते हैं ?
2. क्या आप अपने यहाँ सत्साहित्य विक्रय केन्द्र खोलना चाहते हैं ?
3. क्या आप अपने यहाँ आध्यात्मिक प्रवचनों की कैसिट/ सी. डी./ डी. वी. डी./डी. वी. की लाइब्रेरी खोलना चाहते हैं ?
4. क्या आप वीतराग–विज्ञान शिक्षण–शिविरों का आयोजन करना चाहते हैं ?
5. क्या आप संगठन सम्बंधी कार्यों में रुचि रखते हैं ?
6. क्या आप फैडरेशन की शाखा खोलना चाहते हैं ?
7. क्या आप सामाजिक या सांस्कृतिक कार्यों में रुचि रखते हैं ? यदि हाँ तो.....

तत्काल सम्पर्क करें।

पण्डित पीयूषकुमार शास्त्री संगठन मंत्री, **Mob. :** 9413347829. **E-Mail :** ptstjaipur@yahoo.com	पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल महामंत्री, **Mob. :** 9870016988 **E-Mail :** parmatmb@yahoo.com

द्रव्यलिंग और भावलिंग

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

द्रव्यलिंग और भावलिंग के संबंध में हमारी बहुत गलत धारणाएँ हैं। 'द्रव्यलिंग' शब्द सुनते ही हमें ऐसा लगने लगता है जैसे मुँह में कड़वाहट-सी आ गई हो। द्रव्यलिंग हमें बिल्कुल हेय लगता है और भावलिंग साक्षात् मोक्षस्वरूप ही प्रतीत होता है; लेकिन हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि कोई भी व्यक्ति द्रव्यलिंग और भावलिंग ह्न दोनों के बिना मोक्ष की प्राप्ति नहीं कर सकता।

सिद्धचक्रमहामण्डलविधान की जयमाला में कहा है ह्न

भावलिंग बिन कर्म खिपाई, द्रव्यलिंग बिन शिवपद जाई।
यो अयोग कारज नहीं होई, तुम गुण कथन कठिन है सोई।।

हे भगवन् ! द्रव्यलिंग के बिना कोई मोक्ष चला जाय और भावलिंग के बिना कर्मों का नाश हो जाय ह्न जिसप्रकार यह असंभव है; उसीप्रकार तुम्हारें गुणों का कथन करना भी कठिन है।

जब मोक्ष प्राप्त करने के लिए दोनों ही लिंग अनिवार्य हैं, तब एक बुरा और दूसरा अच्छा ह्न यह कैसे हो सकता है?

यदि कोई कहे कि शास्त्रों में तो द्रव्यलिंगी मुनियों की बहुत निंदा की गई है तो उससे कहते हैं कि **हे भाई ! जहाँ द्रव्यलिंगी मुनियों की निंदा की बात आती है, वह भावलिंग के बिना जो द्रव्यलिंग है, उसकी निंदा है; भावलिंग के साथ जो द्रव्यलिंग है, उसकी नहीं। वस्तुत: द्रव्यलिंग और भावलिंग तो साथ-साथ ही होते हैं।**

यहाँ यह प्रश्न उपस्थित हो सकता है कि जिसप्रकार भावलिंग के बिना होनेवाले द्रव्यलिंग की निंदा होती है; उसीप्रकार द्रव्यलिंग के बिना भावलिंग की भी निंदा होनी चाहिए; परन्तु ऐसा नहीं होता।

इसका उत्तर यह है कि **द्रव्यलिंग के बिना भावलिंग होता ही नहीं है; पर द्रव्यलिंग भावलिंग के बिना हो जाता है।** जब हम किसी को भावलिंगी कहते हैं, तब उसका अर्थ यह होता है कि वह भावलिंगी तो है ही, द्रव्यलिंगी भी है। यही कारण है कि शास्त्रों में भावलिंग की निंदा नहीं है।

इस संबंध में दूसरा विवेचनीय बिन्दु यह है कि **द्रव्यलिंग बाह्यक्रिया का नाम है और श्रामण्य के लिए उसका होना भी अनिवार्य है।** शरीर की नग्नता आदि क्रिया संबंधी भाव, शुभभाव हैं और भावलिंग शुद्धोपयोगरूप है, शुद्धपरिणतिरूप है।

यद्यपि द्रव्यलिंग के बिना मोक्ष नहीं होता, तथापि द्रव्यलिंग से भी मोक्ष नहीं होता; क्योंकि **द्रव्यलिंग तो जड़ की क्रिया और शुभभावरूप है और मोक्ष जड़ की क्रिया और शुभभावों से नहीं होता।**

प्रवचनसार की गाथा २०५ में द्रव्यलिंग का जो स्वरूप कहा है, उसमें जो 'यथाजातरूप' कहा है; उसका तात्पर्य यह है कि जैसा माँ के पेट से जन्म लिया था, वैसा ही रूप। उस रूप के साथ एक लंगोट भी नहीं रख सकते।

इसप्रकार हम देखते हैं कि मुक्तिमार्ग में इन दोनों का होना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य है; पर बात यह है कि शुद्धोपयोग और शुद्धपरिणतिरूप होने से भावलिंग मुक्ति का साक्षात् कारण है, निश्चयकारण है।

यद्यपि शुभक्रिया और शुभभावरूप होने से द्रव्यलिंग साक्षात् कारण नहीं है, निश्चय कारण नहीं है; तथापि भावलिंग का सहचारी होने से उपचरित कारण है, परम्परा कारण है, व्यवहार कारण है और मुक्तिमार्ग में उसका होना भी अनिवार्य है।

मिथ्यात्व तथा अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण और प्रत्याख्यानावरण कषाय भावों के अभावरूप शुद्धपरिणति और शुद्धोपयोग का नाम भावलिंग है और छटवें गुणस्थान के योग्य पंचमहाव्रतादि के शुभभाव और आगमानुसार नग्न दिगम्बर दशा आदि निर्दोष आचरण का नाम द्रव्यलिंग है।

छटवें-सातवें गुणस्थान की भूमिका में झूलनेवाले मुनिराज और इससे भी ऊपर चौदहवें गुणस्थान तक के सभी मुनिराज भावलिंगी हैं और द्रव्यलिंगी भी हैं।

ध्यान रहे अरहंत भगवान भी स्नातक निर्ग्रन्थ मुनिराज ही हैं।

जिन मुनिराजों के बाह्याचरण और शुभभाव तो जिनागमानुसार हों, पर मिथ्यात्व व अनन्तानुबंधी कषायों का अभाव न हो, उन्हें मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी कहते हैं।

जिनके बाह्याचरण और शुभभाव आगमानुसार हों और मिथ्यात्व व अनंतानुबंधी कषायों का अभाव भी हो; किन्तु अप्रत्याख्यानावरण और प्रत्याख्यानावरण कषायों का अभाव नहीं हो; वे चौथे गुणस्थानवाले द्रव्यलिंगी हैं।

इसीप्रकार जिनके बाह्याचरण और शुभभाव आगमानुसार हैं और मिथ्यात्व, अनन्तानुबंधी और अप्रत्याख्यानावरण कषाय का अभाव है, पर प्रत्याख्यानावरण कषाय का अभाव नहीं है; वे पंचमगुणस्थानवर्ती द्रव्यलिंगी हैं।

जिनके बाह्याचरण और शुभभाव भी छटवें गुणस्थान की भूमिका के योग्य हैं और मिथ्यात्व, अनन्तानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण और प्रत्याख्यानावरण कषायों का भी अभाव है; वे सभी भावलिंगी संत हैं।

जिनके न तो मिथ्यात्व व कषायों का अभाव है और न आगमानुसार आचरण ही है; वे न तो द्रव्यलिंगी हैं, न भावलिंगी। उन्हें द्रव्यलिंगी कहना भी द्रव्यलिंग का अपमान है।

आचार्य कुन्दकुन्द भावपाहुड में धर्मविहीन श्रमणों को नटश्रमण कहते हैं और उनके भेष को गन्ने के फूल के समान बताया है, जिन पर न तो फल ही लगते हैं और न जिनमें गंध ही होती है।[1]

अरे भाई ! यह बात शास्त्राधार से गहराई से समझने की है, इसमें किसी भी प्रकार का हठ ठीक नहीं है। यह विषय अत्यन्त संवेदनशील विषय है; अत: इसके प्रतिपादन में भी विशेष सावधानी रखना अत्यन्त आवश्यक है।

(प्रवचनसार की ज्ञानज्ञेयतत्त्वप्रबोधिनी हिन्दी टीका के पृष्ठ नं. ४०१-४०४ से साभार)

(पृष्ठ–३ का शेष ...)

अभ्यास का बल और युक्तियों का अवलम्बन था। वे जानते थे कि नई बात लोगों को अटपटी लगेगी ही, किन्तु इसके बिना जन्म–मरण की बिमारी मिटाने का दूसरा कोई उपाय नहीं है ह्न यह सोचकर उन्होंने अपनी बात को कहना बराबर चालू रखा।

साधारण जनता को यह बातें प्रारंभ में अटपटी लगती थी, धीरे–धीरे जब लोगों ने उनकी बातों पर शांतिपूर्वक विचार किया, आगम के आलोक में उन्हें समझने की कोशिश की, आगम का अभ्यास किया तो उनके नेत्र खुल गये ह्न 'अरे ! यह तो जिनवाणी की ही बात है, इसमें कानजीस्वामी का क्या है ? उन्होंने तो मात्र हमें बताया है, अत: यह तो उनका हम पर अनंत उपकार ही है।' फिर क्या था ? दिन–प्रतिदिन गुरुदेवश्री की लोकप्रियता बढती ही गई। आज तो उनकी कृपा से लाखों लोग सत्य को समझने लगे हैं।

धर्म से पुण्य की तो जाति ही जुदी है। दोनों में महान अन्तर है। पुण्य और धर्म में किसीप्रकार का कोई तालमेल ही नहीं है। एक पूर्व है तो दूसरा पश्चिम ह्न दोनों में छत्तीस का आंकड़ा है। जैसे लहसुन खाते–खाते अमृत की डकार नहीं आ सकती, उसीप्रकार पुण्य करने की इच्छा वालों को त्रिकाल में कभी भी धर्म प्रकट नहीं हो सकता। अरे ! धर्म तो दूर, पुण्य की इच्छा रखनेवालों को तो पुण्य बंध भी नहीं होता, क्योंकि पुण्य की चाह का अर्थ है पुण्य के फल की चाह अर्थात् भोगों की चाह और भोगों की चाह तो साक्षात् पाप भाव है। पाप भाव से पुण्य बंध कैसे होगा? इसीलिये तो कहा है कि ह्न

'सुकृतमपि समस्तं भोगिनां भोगमूलम्।' सभी प्रकार के पुण्यभाव भोगियों के भोग के कारण है।

यद्यपि पुण्यभाव और पुण्य क्रियायें ज्ञानी सम्यग्दृष्टि व मुनिजनों में भी पायी जाती है, किन्तु उनके पुण्य की चाह नहीं है। जब–जब ज्ञानी व मुनि अपनी वीतराग परिणति में नहीं रह पाते, तब–तब उनके शुभभावरूप पुण्य क्रियायें ही पायी जाती है, किन्तु उनको इसका हर्ष नहीं है, बल्कि खेद वर्तता है। वे इनमें ही संतुष्ट होकर रम नहीं जाते। वे इनमें धर्म नहीं मानते।

जिसप्रकार सर्कस में झूले पर झूलती हुई लड़की झूले से चूक जाये तो जाली पर गिरती है, किन्तु गिरने पर वह हर्षित नहीं होती, अपितु खेद–खिन्न होती है। गिरना उसे कोई गौरव की बात नहीं लगती, बल्कि शर्म महसूस होती है, लेकिन जमीन पर गिरने से तो मौत ही होगी, अत: जान बचाने के लिये जाती बांधते हैं। विश्राम करने के लिये नहीं, उसीप्रकार अपने स्वभाव के झूले से गिरे तो शुभभाव की जाली पर आते हैं, क्योंकि अशुभभाव की कठोर भूमि पर गिरना तो साधु की मौत है। अशुभभाव में तो साधुता ही खण्डित हो जाती है। ज्ञानी सम्यग्दृष्टि के शुभाशुभ दोनों ही प्रकार के भावों को अस्तित्व है, किन्तु उनकी चाह नहीं है। यदि ज्ञानी के कोई चाह है तो एक मात्र कषाय रहित शुभाशुभभाव रहित अपने त्रिकाली ज्ञायक स्वभाव की और वीतरागभावरूप धर्म की।

पुण्य और धर्म ये दोनों भिन्न–भिन्न वस्तुयें है। इन दोनों के अन्तर को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार से समझ सकते हैं ह्न

(1) धर्म तो आत्मा के आश्रय से उत्पन्न होता है और पुण्य पर के आश्रय से।

(2) धर्म शुद्धभाव है और पुण्य अशुद्धभाव (शुभभाव)।

(3) धर्म का फल मोक्ष है और पुण्य का फल संसार (स्वर्ग)।

(4) धर्म आत्मा की निर्दोष निर्विकारी पर्याय है और पुण्य सदोष, विकारी पर्याय।

(5) धर्म से आत्मा को सच्चे सुख की प्राप्ति होती है और पुण्य से आकुलताजनक, नाशवान, क्षणिक अनुकूल संयोग मिलते हैं, जो वियोग होने पर महादुख के कारण बनते हैं। संयोग काल में भी वे सभी प्रकार की इच्छाओं की पूर्ति नहीं करते।

(6) धर्म वीतरागभाव और पुण्य रागभाव है।

(7) पुण्य तो यह जीव अनादि काल से करता आ रहा है, किन्तु धर्म अनादिकाल से आज तक एक समय मात्र को भी नहीं किया।

(8) पुण्य से बाह्य जड़ लक्ष्मी (धूल) मिलती है, जबकि धर्म से अंतरंग केवलज्ञान लक्ष्मी प्रकट होती है।

(9) पुण्य तो विभाव है, उससे संसार परिभ्रमण नहीं मिटता, धर्म आत्मानुभूति स्वरूप सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र रूप है, उसे मोक्षमार्ग कहो, धर्म कहो, संवर कहो, रत्नत्रय कहो अथवा आत्म शांति का उपाय कहो ह्न सब एक ही बात है। इसके अतिरिक्त पुण्य तो विकारी पर्याय है, इसलिये वह वास्तव में मोक्षमार्ग नहीं, संवर नहीं, रत्नत्रय भी नहीं, धर्म भी नहीं और सुख शांति का उपाय भी नहीं है।

ऐसा यह धर्म कहीं बाहर से नहीं आता। आत्मा का धर्म तो आत्मा में से ही प्रकट होता है।

आगम में नव तत्त्व कहें हैं। संवर और निर्जरा तत्त्वों में धर्म का समावेश होता है, किन्तु अज्ञानीजन पुण्य (आश्रव–बंध) से धर्म मानते हैं, वे पुण्यतत्त्व और धर्मतत्त्व को एकमेक करते हैं, मिलाते हैं ह्न ऐसे लोग वास्तव में नवतत्त्वों को ही नहीं समझे हैं, अत: जो धर्म करना चाहते हैं, सुखी होना चाहते हैं, उन्हें सर्वप्रथम इन नव तत्त्वों का यथार्थ स्वरूप समझकर पुण्य और धर्म का रहस्य समझना ही होगा।

इस पुण्य और धर्म के रहस्य को जानकर, पहिचानकर इसको जगत के सामने उद्घाटन करनेवाले तथा जन–जन की चर्चा का विषय बना देनेवाले गुरुदेवश्री अब हमारे बीच नहीं है, किन्तु उनकी यह वाणी हजारों वर्षों तक जन–जन में गूँजती रहेगी। वास्तव में उनका हम पर अनंत उपकार है, यद्यपि ये सब बातें जिनवाणी में भरी पड़ी थी, किन्तु हमारे लिये वे जमीन में गड़े हुये धन के समान थी, जिन्हें स्वामीजी ने निकालकर हमें बताया और हमारे भव–भव के दुख–दारिद्र्य को दूर किया।

ऐसे परम उपकारी गुरुदेवश्री के प्रति हम चिर–कृतज्ञ हैं, उनकी पावन आत्मा शीघ्र ही पूर्णता को प्राप्त हो ह्न यही भावना है। हम सब भी उनके पंथानुगामी बनकर अपने अंतिम ध्येय को प्राप्त हों ह्न यही गुरुदेवश्री का हमारे लिये परम प्रसाद है। ●

17 मई 2008, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-064 / 2006-08

अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ का अधिवेशन

नई दिल्ली : अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन आचार्यश्री विद्यानन्दजी मुनिराज के ससंघ सान्निध्य में 25 अप्रैल, 08 को बाहुबली एन्कलेव में पद्मश्री सरयू दफ्तरी मुम्बई की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। आपने अपने उद्‌बोधन में पत्रकारों को रिसर्च की आदत डालने का आह्वान करते हुए पठनीय सामग्री प्रकाशित करने का सुझाव दिया।

मुख्य अतिथि के रूप में पधारे वीतराग-विज्ञान के सम्पादक डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने कहा कि पत्रकारिता समाज का दर्पण ही नहीं अपितु उसे दीपक का कार्य भी करना चाहिए। पत्रकारिता बहुत बड़ी ताकत है, पत्रकारों को कठोर से कठोर बात अत्यन्त विनम्र भाषा में लिखना चाहिए तथा ऐसी सामग्री प्रकाशित करना चाहिए जिसे बार-बार पढ़ने की इच्छा हो।

इस अवसर पर समारोह के विशिष्ठ अतिथि पंजाब केसरी के कार्यकारी अध्यक्ष स्वदेश भूषण जैन ने पत्रकारों को पीत पत्रकारिता से दूर रहकर पोजेटिव तथ्य समाज के समक्ष प्रस्तुत करने की बात कही। आपने कहा हमारा कार्य केंची के समान न होकर सुई धागे जैसा होना चाहिए। संघ के उपाध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र कुमार बंसल ने कहा कि पत्रकारिता महत्वपूर्ण स्तम्भ है, उसे आगम के मूल्यों की रक्षा के प्रति सजग रहना चाहिए। सभा को संस्कार सागर के सम्पादक ब्र. जिनेश मलैया, स्वतंत्र जैन चिन्तन के सम्पादक श्री नरेन्द्र जैन तथा सुरेशचन्द बारोलिया ने भी सम्बोधित किया।

आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज ने सभी पत्र सम्पादकों को अपना शुभाशीष प्रदान करते हुए समाज में कलह पैदा करने से बचने की प्रेरणा दी तथा संस्कार पैदा करने हेतु रुचिकर सामग्री प्रकाशित करने की सलाह दी। आपने अपना मूल मंत्र मत ठुकराओ, गले लगाओ, धर्म सिखाओ के सिद्धान्त पर चलने का आह्वान किया।

अधिवेशन के पूर्व कार्यकारिणी की मीटिंग संघ के कार्याध्यक्ष श्री नरेन्द्रकुमार जैन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। मीटिंग में सम्पादक संघ के सदस्यों ने अमूल्य सुझाव रखकर संगठन को मजबूत करने की दिशा में कार्य करने का वचन दिया। संघ के महामंत्री अखिल बंसल ने संघ की आवश्यकता बताते हुए उसकी गतिविधियों की जानकारी दी तथा मंच संचालन किया। वीर के सम्पादक श्री रवीन्द्र मालव को सर्व सम्मति से संघ का नया अध्यक्ष चुना गया। ह्न **अखिल बंसल**

स्लिपडिस्क रोगी ध्यान दें !

सम्पूर्ण उपचार बिना दवा, बिना कसरत, बिना चीरफाड, बिना आराम किए विश्व की नवीनतम तकनीक माइक्रो एक्यूप्रेशर द्वारा शीघ्र उपचार।

डॉ. पीयूष त्रिवेदी (मो.) 09828011871

गोल्ड मेडलिस्ट, बी.ए. एम.एस., एम.डी. (एक्यू.)

डिप्लोमा इन योगा, सुजोक (मास्को) एफ.ए.आर.सी. एस. (लंदन)

मेडिनोवा पोली क्लीनिक, केसरगढ, जे.एल.एन. मार्ग, जयपुर

समय : सायं 6 बजे से 9 बजे तक, रविवार को प्रात: 8 से 12 बजे तक

नोट – एक्यूप्रेशर सेवा समिति द्वारा 300 से अधिक नि:शुल्क शिविर आयोजित।

अन्य रोग : जोडों का दर्द, गर्दन का दर्द, मोटापा, मायोपैथी, मानस विकृतियां, मधुमेह तथा उच्च रक्तचाप आदि की सफल चिकित्सा।

कहाँ और कब से ?

जो जिनमन्दिर, मुमुक्षु मण्डल और युवा फैडरेशन की शाखायें अपने यहाँ डॉ. भारिल्ल कृत **ज्ञायकभावप्रबोधिनी टीका सहित समयसार** सामूहिक स्वाध्याय (प्रवचन) में आरम्भ करना चाहते है; प्रबुध्द श्रोताओं के हाथ में भी उक्त ग्रन्थ रहें – इस भावना से श्रीमती गुणमाला भारिल्ल धर्मपत्नी डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल उन्हें उक्त ग्रन्थ की 20 प्रतियाँ ससम्मान भेंट करना चाहती हैं।

आप कहाँ (स्थान) और कब (दिनांक) से स्वाध्याय आरम्भ करेंगे ह्न इस जानकारी के साथ तत्काल लिखें अथवा सूचित करें, जिससे आपको समय के पूर्व ही उक्त ग्रन्थ उपलब्ध कराये जा सकें।

ह्न प्रचार विभाग, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -302015; फोन-(0141)2705581, 707458; ई-मेल : ptstjaipur@yahoo.com

फैडरेशन का 29 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

रविवार, दिनांक 25 मई, 08 को दोपहर, 2:00 बजे से

अध्यक्ष	: श्री विपुल-कान्तिभाई मोटाणी, मुम्बई
उद्‌घाटनकर्त्ता	: श्री अजितभाई जैन, बड़ौदरा
मुख्य अतिथि	: श्री अजितकुमार जैन दिल्ली
	श्री अशोककुमार बड़जात्या इन्दौर
विशिष्ट अतिथि	: श्री प्रेमचन्द बजाज कोटा, श्री सन्तोष जैन कानपुर,
	श्री आदीश जैन दिल्ली, श्री देवेन्द्र जैन सहारनपुर
संचालन	: श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल (महामंत्री)

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

18 मई से 4 जून	अलीगढ	शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर
5 जून से 30 जुलाई	विदेश यात्रा	धर्म प्रचारार्थ
3 से 12 अगस्त	जयपुर	शिक्षण-शिविर
27 अगस्त से 3 सितम्बर	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
4 से 14 सितम्बर	मुम्बई	दशलक्षण महापर्व

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.

प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)

प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –

ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

फोन : (0141) 2705581, 2707458

फैक्स : (0141) 2704127